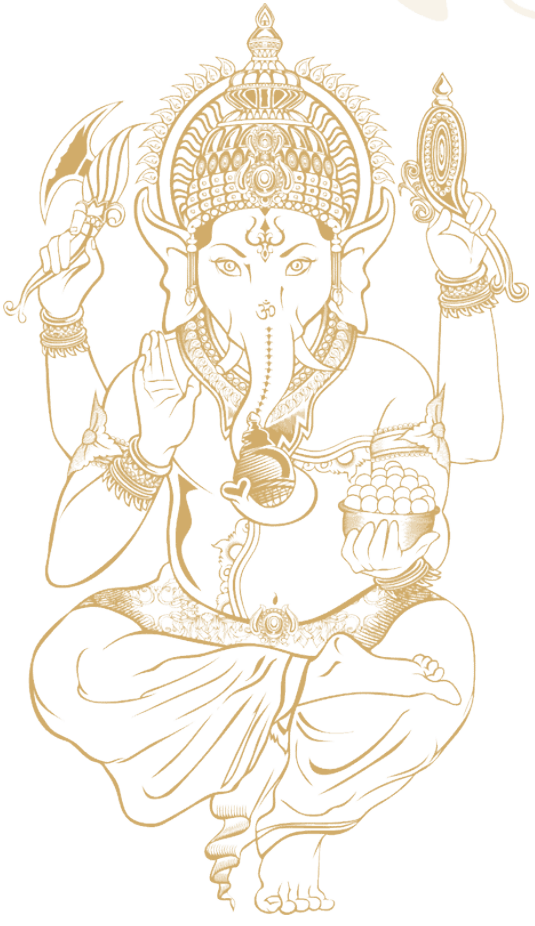

Mr.Shubham Mishra

Ms.Rishikh Sharma

Model: Web-FreeMatching

Order No: 119922803

पुल्लिंग	लिंग	स्त्रीलिंग
03/09/1998	जन्म तिथि	18/04/2000
गुरुवार	दिन	मंगलवार
घंटे 18:35:00	जन्म समय	16:45:00 घंटे
घटी 31:20:41	जन्म समय(घटी)	26:56:08 घटी
India	देश	India
Hyderabad	स्थान	Hyderabad
17:22:00 उत्तर	अक्षांश	17:22:00 उत्तर
78:26:00 पूर्व	रेखांश	78:26:00 पूर्व
82:30:00 पूर्व	मध्य रेखांश	82:30:00 पूर्व
घंटे -00:16:16	स्थानिक संस्कार	-00:16:16 घंटे
घंटे 00:00:00	ग्रीष्म संस्कार	00:00:00 घंटे
06:02:43	सूर्योदय	05:58:32
18:28:22	सूर्यास्त	18:32:56
23:50:11	चित्रपक्षीय अयनांश	23:51:24

विंशोत्तरी	अंश	राशि	ग्रह	राशि	अंश	विंशोत्तरी
सूर्य 0वर्ष 9मा 8दि	20:03:10	कुंभ	लग्न	कन्या	10:02:18	मंगल 2वर्ष 7मा 14दि
राहु	16:59:48	सिंह	सूर्य	मेष	04:51:56	गुरु
12/06/2016	08:16:47	मक	चंद्र	तुला	01:40:06	02/12/2020
13/06/2034	14:57:39	कर्क	मंगल	मेष	25:17:02	02/12/2036
राहु 23/02/2019	29:22:11	कर्क	बुध	मीन	14:48:22	गुरु 20/01/2023
गुरु 19/07/2021	00:51:42	मीन व	गुरु	मेष	19:20:53	शनि 03/08/2025
शनि 25/05/2024	02:08:04	सिंह	शुक्र	मीन	20:33:46	बुध 09/11/2027
बुध 12/12/2026	09:29:12	मेष व	शनि	मेष	23:44:12	केतु 14/10/2028
केतु 31/12/2027	07:38:35	सिंह	राहु व	कर्क	05:22:23	शुक्र 15/06/2031
शुक्र 31/12/2030	07:38:35	कुंभ	केतु व	मक	05:22:23	सूर्य 03/04/2032
सूर्य 24/11/2031	15:45:52	मक व	हर्ष	मक	26:25:04	चन्द्र 03/08/2033
चन्द्र 25/05/2033	05:55:28	मक व	नेप	मक	12:36:24	मंगल 10/07/2034
मंगल 13/06/2034	11:33:10	वृश्चि	प्लूटो व	वृश्चि	18:44:10	राहु 02/12/2036

लग्न-चलित

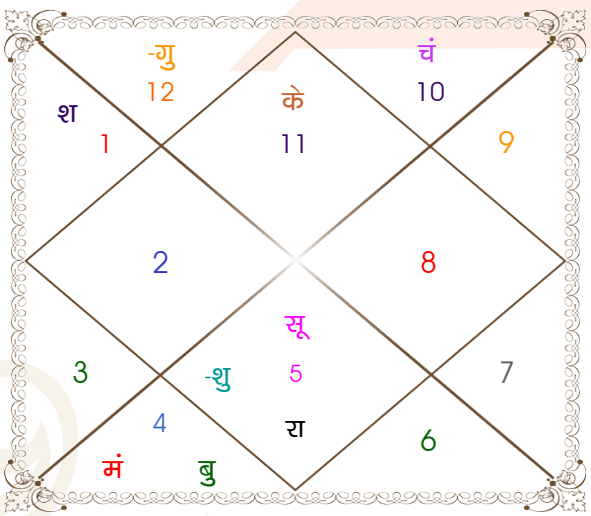

लग्न-चलित

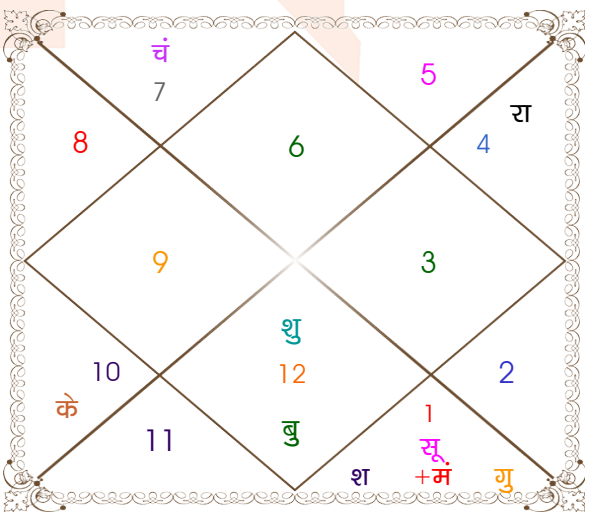

अष्टकूट गुण सारिणी

कूट	वर	कन्या	अंक	प्राप्त	दोष	क्षेत्र
वर्ण	वैश्य	शूद्र	1	1.00	--	जातीय कर्म
वश्य	चतुष्पाद	मानव	2	1.00	--	स्वभाव
तारा	मित्र	विपत	3	1.50	--	भाग्य
योनि	नकुल	व्याघ्र	4	2.00	--	यौन विचार
मैत्री	शनि	शुक्र	5	5.00	--	आपसी सम्बन्ध
गण	मनुष्य	राक्षस	6	0.00	हाँ	सामाजिकता
भकूट	मकर	तुला	7	7.00	--	जीवन शैली
नाड़ी	अन्त्य	मध्य	8	8.00	--	स्वास्थ्य/संतान
कुल :			36	25.50		

गणदोष प्रभावहीन है क्योंकि दोनों के राशि स्वामियों मे मित्रता है।

डतणैनड्ढीउ डपीतं का वर्ग सिंह है तथा डेण्त्पीपीर्ि ैितउं का वर्ग मृग है। इन दोनों वर्गो में परस्पर शत्रुता है।

अष्टकूट मिलान के अनुसार डतणैनड्ढीउ डपीतं और डेण्त्पीपीर्ि ैितउं का मिलान अत्युत्तम है।

मंगलीक दोष मिलान

डतणैनड्ढीउ डपीतं मंगलीक नही है क्योंकि मंगल लग्न कुण्डली में षष्ठ भाव में स्थित है।

डेण्त्पीपीर्ि ैितउं मंगलीक है क्योंकि मंगल लग्न कुण्डली में अष्टम् भाव में स्थित है।

तनुधनुमदमायुर्लाभ व्ययगः कुजस्तु दाम्पत्यम्।
विघटयति तद् गृहेशो न विघटयति तुंगमित्रगेहेवा।।

यदि मंगल स्व राशि अथवा उच्च का हो तो मंगली दोष भंग हो जाता है।

क्योंकि मंगल डेण्त्पीपीर्ि ैितउं कि कुण्डली में स्वराशि में है अतः मंगलीक दोष प्रभावहीन हो जाता है।

कुजजीवो समायुक्तो युक्तो व कुजचन्द्रमा।
न मंगली मंगल राहु योग।

यदि मंगल-गुरु या मंगल-राहु या मंगल-चंद्र एक राशि में हों तो मंगली दोष भंग हो जाता है।

क्योंकि मंगल एवं गुरु डेण्त्पीपीर्ि ैितउं कि कुण्डली में एक राशि में हैं अतः मंगलीक दोष

प्रभावहीन हो जाता है।

त्रिषट् एकादशे राहू त्रिषट् एकादशे शनिः।
त्रिषट् एकादशे भौमः सर्वदोषविनाशकृत्।।

वर या कन्या की कुंडली में से एक मंगलीक हो और दूसरे की कुंडली में 3,6,11 वें भावों में राहु, मंगल या शनि हो तो मंगलीक दोष समाप्त हो जाता है।

क्योंकि शनि डतणैनईीउ डपीतं कि कुण्डली में तृतीय भाव में स्थित है अतः मंगलीक दोष कट जाता है।

डतणैनईीउ डपीतं तथा डेण्त्पीपर्ी ीतउं में मंगलीक मिलान ठीक है।

निष्कर्ष

अष्टकूट एवं मंगलीक दोष न होने के कारण दोनों का मिलान उत्तम हैं।